

SHRI ARUP KUMAR DUTTA

Shri Arup Kumar Dutta is a fulltime author and freelance journalist who has attained international recognition. A versatile writer and scholar, during a span of five decades he has written short-fiction, long-fiction, non-fiction, satires, books for young adults as well as newspaper articles and columns. With 16 books for adults and 17 novels for young adults to his credit so far, he has been not only acknowledged as a pioneer in English writing in the North-East, but also as a writer who has spent a lifetime familiarizing the rest of India about the history and culture of this region.

2. Born at Jorhat in Assam on July 2, 1946, Shri Dutta completed his Senior Cambridge from the Lawrence School, Sanawar, and B.A. and M.A. from Ramjas College and Delhi University. He returned to Assam to take up teaching for sometime even as he commenced his writing career. With his books such as The Kaziranga Trail and Unicornis attaining success at a global level, he could give up teaching and take to full time writing and freelance journalism.

3. Shri Dutta's longer works of fiction include The Anagarika's Swansong, Red Camellia Green and the Ahoms, the last being an imaginative account of a dynasty which ruled the Brahmaputra Valley for six hundred years. Based as they are on meticulous, investigative research and documentation, his non-fiction books for adults exhibit the true journalistic ethos and also testify to his scholarship and erudition. These include The Brahmaputra (formally released by then Prime Minister Atal Behari Vajpayee at New Delhi), Unicornis – The Great Indian One Horned Rhinoceros (formally released by animal-activist Smt. Maneka Gandhi in New Delhi), The Final Frontier, The Roving Minstrel etc.

4. Shri Dutta also writes for young adults and is one of the biggest names in India in this genre. His adventure novels for young people include The Kaziranga Trail, The Blind Witness, Smack, Lure of Zangrila, Footprints in the Sand, The Boy who became King etc. His books have been translated to many Indian languages as well as foreign languages such as German, Japanese, Italian, Russian, Czech, Hungarian etc. Three of his books have been made into feature films while two have been brought out in Japanese Braille. Two of his books are featured in the 'Literature of the World' series brought out by the Japanese newspaper Asahi Shimbun in October 2, 2001 and his Kaziranga Trail is one of the three entries from India included in the New York publication 1001 Books You Must Read Before You Grow Up.

5. Shri Dutta has been associated with numerous organisations and institutions at the national and regional level. As a writer of newspaper editorials and columns he has been instrumental in the moulding public opinion. In 2004 the Government of India appointed him Director, Jawaharlal Nehru Indian Cultural Centre, Jakarta, with the rank of a Counselor, the Embassy of India, Jakarta, Indonesia, a post he held for four years. His books have received numerous prizes and awards and he was the first recipient of the Shankar's Award in 1979. He has also been given the Journalist Welfare Foundation, New Delhi Award (1982), The Kamal Kumari National Award for Journalism (2004), The Lifetime Achievement Honour by Association of Writers and Illustrators for Children, New Delhi, the Indian chapter of the International Board of Books for Young People (IBBY) etc. In 2018 he was conferred a D. Litt Honoris Causa by the University of Dibrugarh.



श्री अरुप कुमार दत्ता

श्री अरुप कुमार **दत्ता** अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पूर्णकालिक लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार हैं। एक बहुमुखी प्रतिभावान लेखक एवं विद्वान के रूप में अपने पांच दशकों के दौरान लघु कथा, वृहद् कथा, नॉन फिक्शन, व्यंग्य, युवाओं के लिए पुस्तकों तथा समाचारपत्रों के लेखों एवं स्तंभों को लेखनीबद्ध किया है। वयस्कों के लिए 16 पुस्तकों तथा युवाओं के लिए 17 उपन्यासों को लेखनीबद्ध करने के पश्चात अब आपको न केवल पूर्वोत्तर में अंग्रजी भाषा के एक पुरोधा लेखक के रूप में ख्याति प्राप्त हुई है अपितु आप एक ऐसे प्रतिभावान लेखक के रूप में भी विख्यात हुए हैं जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन शेष भारत को पूर्वोत्तर के इतिहास तथा संस्कृति से रुबरु करवाने के लिए समर्पित कर दिया।

2. आपका जन्म 2 जुलाई, 1946 को जोरहाट, असम में हुआ। आपने लॉरेंस स्कूल, सानावर से अपनी सीनियर कैंब्रिज की शिक्षा प्राप्त की तथा रामजस कॉलेज एवं दिल्ली विश्वविद्यालय से अपनी बी. ए. एवं एम. ए. की डिग्री प्राप्त की। इसके उपरांत आप असम लौट आए तथा कुछ समय के लिए आपने शिक्षण कार्य किया और आपने अपने लेखन कॅरियर की शुरूआत की। आपकी पुस्तकों 'द काजीरंगा ट्रेल' एंड 'यूनिकोर्निस' को वैश्विक स्तर पर इतनी ख्याति मिली कि जिससे आपने शिक्षण कार्य को छोड़कर पूर्णकालिक लेखन एवं स्वतंत्र पत्रकार के रूप में कार्य प्रारंभ कर दिया।

3. आपकी वृहद् कथाओं संबंधी रचनाओं में द अनागरिकाज स्वानसोंग, रेड केमेलिया ग्रीन एंड द अहोमज, शामिल हैं तथा इनमें से अंतिम रचना में आपने ब्रहमपुत्र घाटी में 600 वर्षों तक शासन करने वाले साम्राज्य का एक कल्पनाशील वृतांत प्रस्तुत किया है। चूंकि आपकी रचनाएं, छिन्द्रान्वेषी विवेचनात्मक अनुसंधान एवं प्रलेखन पर आधारित हैं। अत: वयस्कों के लिए आपके द्वारा रचित नॉन फिक्शन पुस्तकें पत्रकारिता के वास्तविक मूल्यों को प्रदर्शित करती है तथा आपकी विद्वता एवं पांडित्य को परिलक्षित करती हैं। इन रचनाओं में ब्रहमपुत्र (औपचारिक रूप से तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा नई दिल्ली में विमोचन किया गया), यूनिकॉर्निस -द ग्रेट इंडियन वन होर्नड राइनोसिरस (औपचारिक रूप से एनिमल एक्टिविस्ट श्रीमती मेनका गांधी द्वारा नई दिल्ली में विमोचन किया गया) फाइनल फ्रंटियर, द रोविंग मिंस्ट्रेल इत्यादि शामिल हैं।

4. आप युवाओं के लिए भी पुस्तकों की रचना करते हैं तथा इन विधाओं के लेखकों में आप भारत की जानी मानी शख्सियत हैं। युवाओं के लिए आपके द्वारा रचित साहसिक उपन्यासों में काजीरंगा ट्रेल, द लाइंड विटनेस, स्मैक, ल्योर ऑफ जंगरीला, फुटप्रिंट्स इनसैंड, द बॉय हू बिकेम किंग इत्यादि शामिल हैं। आपकी पुस्तकों का जर्मन, जापानी, इटेलियन, रूसी, चैक, हंगेरियन इत्यादि जैसी अनेक विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया गया है। आपकी तीन पुस्तकों पर फीचर फिल्में भी बनाई गई हैं जबकि दो पुस्तकें जापानी ब्रेल में अनुदित की गई हैं। आपकी दो पुस्तकें जापानी समाचार पत्र असाही शिंबून द्वारा चलाई जाने वाली "लिट्रेचर ऑफ द वर्ल्ड" सीरीज में दिनांक 2 अक्तूबर, 2001 को प्रकाशित की गई तथा आपकी रचना 'काजीरंगा ट्रेल' भारत की ओर से भेजी गई उन तीन प्रविष्टियों में शामिल थी जिन्हें न्यूयार्क के प्रकाशन '1001 बुक्स यू नस्ट रीड बिफोर यू ग्रो अप' में स्थान प्राप्त हुआ।

5. आप राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर अनेक संगठनों एवं संस्थानों से जुड़े रहे हैं। समाचार पत्र संपादकीय एवं कॉलम के लेखक के रूप में आपने जन अवधारणा को परिवर्तित करने में अहम भूमिका अदा की है। वर्ष 2004 में भारत सरकार द्वारा आपको जवाहर लाल नेहरू भारतीय संस्कृति केन्द्र के निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया तथा भारतीय दूतावास, जकार्ता, इंडोनेशिया में आपने काउंसलर के रैंक में चार वर्षों तक अपनी सेवाएं प्रदान की। आपकी पुस्तकों को अनेक पुरस्कारों एवं अवार्ड्स से सम्मानित किया गया है तथा वर्ष 1979 में शंकर अवार्ड से सम्मानित आप पहले व्यक्ति थे। आपको जर्नलिस्ट वेल्फेयर फाउंडेशन, नई दिल्ली अवार्ड (1982), पत्रकारिता के लिए कमल कुमारी राष्ट्रीय पुरस्कार (2004), एसोसिएशन ऑफ राइटर्स एंड इलस्ट्रेटर्ज फॉर चिल्ड्रन, नई दिल्ली द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड; द इंडियन चैप्टर ऑफ द इंटरनेशनल बोर्ड ऑफ बुक्स फॉर यंग पीपल (आईबीवीवाई) इत्यादि जैसे पुरस्कारों से अलंकृत किया गया है। वर्ष 2018 में आपको डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय द्वारा डी. लिट. ओनरिस कोसा की उपाधि से नवाजा गया।